चेतना विकास मूल्य शिक्षा केंद्र

CVMSK- शिक्षा व्यवस्था का प्रारूप_c

ग्राम-अछोटी, जिला-दुर्ग, छत्तीसगढ़

मध्यस्थ दर्शन सह-अस्तित्ववाद
प्रणेता- श्री ए. नागराज जी
के मार्गदर्शन में स्थानीय अभिभावक समूह का प्रयास

मानवीय शिक्षा व्यवस्था का प्रारूप

अभिभावक - शिक्षक मार्गदर्शिका

प्रकाशक - मानवीय शिक्षा शोध संस्थान, अभ्युदय संस्थान,
शिक्षा संस्कार व्यवस्था समिति,
चेतना विकास मूल्य शिक्षा केंद्र, ग्राम - अछोटी, जिला - दुर्ग, छत्तीसगढ़

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

अभ्युदय संस्थान, चेतना विकास मूल्य शिक्षा व्यवस्था

घोषणा

"परिवारमूलक स्वराज्य व्यवस्था की स्थापना के लिए
(१००० परिवार, दस गांव, चार सोपान)
भावी पीढ़ी में समझदारी का संस्कार, जीवन विद्या अध्ययन विधि से प्रस्थापित करना।"

शिक्षा-संस्कार व्यवस्था का उद्देश्य

- विद्यार्थियों में मानवीयता अर्थात समझदारी (ज्ञान, विवेक, विज्ञान) विकसित करना।
- अभिभावकों में, परिवार के सभी प्रौढ़ों में, परिवारमूलक स्वराज्य व्यवस्था की ज़िम्मेदारी स्वयं में समझदारी के विकास के प्रमाण रूप में, वहन का विश्वास की प्रेरणा जगाना।
- अभिभावक-शिक्षकों में उपकार प्रमाण का अवसर देना।
- ग्राम समूह में धरती एक राष्ट्र की भावना को पुष्ट करना।
- प्रकृति के साथ तालमेलपूर्वक रहना, सीखे हुए को करना और सिखाना।

कृतज्ञता ज्ञापन

चेतना विकास मूल्य शिक्षा केन्द्र, अछोटी की स्थापना में अभ्युदय संस्थान परिवार, ग्राम अछोटी, हिंगना, ढोर सहित आसपास के परिवार, छत्तीसगढ़ शासन, छत्तीसगढ़ सहित देश विदेश की अनेक संस्थाएं और व्यक्तियों ने समर्पण किया है और यह सहयोग निरंतर हो रहा है।

हम,

आप सभी के प्रति कृतज्ञ है।

शिक्षा संस्कार व्यवस्था सामिति, ग्राम अछोटी

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

अनुक्रमाणिका

1. शिक्षा के लिए विकल्प	3
2. चेतना विकास मूल्य शिक्षा का लघु प्रस्ताव	5
2.1 मानवीय शिक्षा-नीति का प्रारुप	6
3. चेतना विकास मूल्य शिक्षा पाठ्यक्रम	12
3.1 मानव संचेतनावादी शिक्षा संस्कार कक्षावार योजना	13
3.2 मानव संचेतनावादी शिक्षा संस्कार पाठ्यक्रम तालिका	28
4. अभिभावक विद्यालय, अछोटी के संचालन हेतु जीवन विद्या परिवारजनों का मंतव्य (सर्वेक्षण निष्कर्ष - संक्षिप्त)	40
5. चेतना विकास मूल्य शिक्षा केंद्र की स्थापना का इतिहास और वर्तमान में क्रियान्वित कार्यप्रणाली की सामान्य प्रस्तुति	44
5.1 शिक्षा केंद्र में शिक्षा एवं व्यवस्था समिति के नियमित गोष्ठियों का वर्तमान स्वरुप	45
6. परिशिष्ट	48

1. शिक्षा के लिए विकल्प

आदिकाल से ही मनुष्य-परंपरा में शिक्षा की बात है। यह जंगल-युग से ही है। शिक्षा के बारे में आदमी चर्चा करते ही आया है। इस क्रम में हमारे देश में वैदिक-शिक्षा की बात आयी। दूसरे देश में बाइबिल को शिक्षा में लाने की बात हुई। तीसरे देश में कुरान को शिक्षा में लाने की बात हुई। ऐसे ही विभिन्न प्रकार की शिक्षा-परम्पराएं धरती पर स्थापित हुई। यह क्रम चलते-चलते आज के समय में विज्ञान-शिक्षा का सभी देशों में लोकव्यापीकरण हो चुका है। विज्ञान-शिक्षा से अपेक्षा थी कि इससे सबको तृप्ति मिलेगी, लेकिन इससे तृप्ति मिला नहीं।

अभी तक जो कुछ भी शिक्षा में आया, उसके "विकल्प" के रूप में मध्यस्थ-दर्शन का "चेतना-विकास, मूल्य-शिक्षा" का प्रस्ताव है। जंगल युग से आज तक आदमी जीव-चेतना में जिया है। मनुष्य ने जीव-चेतना में जीते हुए, जीवों से अच्छा जीने के क्रम में शरीर-सुविधा से सम्बंधित सभी वस्तुएं प्राप्त कर लीं। इसमें खाने-पीना, कपड़ा, मकान, यान-वाहन, दूर-संचार की सभी वस्तुएं शामिल हैं। यह सब होने के बावजूद मनुष्य को शिक्षा से संतुष्टि नहीं मिली। इसका मूल कारण यह है - मनुष्य ज्ञान-अवस्था का है, और उसको जीव-चेतना की शिक्षा से संतुष्टि मिल नहीं सकती।

इसलिए "विकसित चेतना" के अध्ययन को शिक्षा में लाने के लिए प्रस्ताव है। मानव-चेतना, देव-चेतना, दिव्य-चेतना "विकसित चेतना" है। इस तरह जी कर मनुष्य "कृत-कृत्य" हो सकता है। "कृत-कृत्य" होने का मतलब है - मानव जिस बात के लिए ज्ञान-अवस्था में उदय हुआ है, वह सार्थक होना। इस प्रस्ताव के संपर्क में जो भी आये हैं, उनका यह स्वीकृति है - ऐसा होना बहुत ज़रूरी है।

परिवार में हर व्यक्ति मानव-चेतना में पारंगत हों, देव-चेतना में जी सकें, दिव्य-चेतना को प्रमाणित कर सकें - ऐसा "अधिकार" बन सके। कितने लोग इस तरह पारंगत हुए, कितने लोग इस तरह प्रमाणित हो सकें - इसको पहचानने के लिए इस अनुभव-शिविर का आयोजन है।

"चेतना-विकास" से आशय है - मानव-चेतना में जीने के लिए विश्वास स्वयं में पैदा होना। मानव के लिए मानवत्व ही स्वत्व के रूप में पहचानने की आवश्यकता है। देवत्व और दिव्यत्व श्रेष्ठतर और श्रेष्ठतम हैं। मानवत्व से श्रेष्ठता की शुरुआत है। इस आधार पर इसके लिए पारंगत होने की बात आती है।

मानवत्व का क्रिया-स्वरुप है - मानव के साथ न्याय-धर्म-सत्य पूर्वक जी पाना, और मनुष्येत्तर प्रकृति के साथ नियम-नियंत्रण-संतुलन पूर्वक जी पाना। यदि ऐसे जीना बन पाता है तो हम परिवार में व्यवस्था पूर्वक जी पाते हैं। मानव-चेतना पूर्वक मनुष्य समाधानित होता है, और परिवार में "समाधान-समृद्धि" प्रमाणित करने योग्य होता है। इस प्रकार मनुष्य के जीने में विषमता समाप्त होता है। विषमता समाप्त होने का पहला मुद्दा है - "नर-नारी में समानता"। समझदारी को ही नर-नारियों में समानता के बिंदु के रूप में पहचाना जा सकता है। यदि इस बिंदु को पाना है, तो मानव-चेतना को अपनाना ही होगा। मानव-चेतना के इस प्रस्ताव को लेकर हम इस घर के बाहर तक तो पहुच गए हैं, पर यह संसार तक पहुँच गया - मैं इस पर अभी विश्वास नहीं करता हूँ। अब हमारी सभी की जिम्मेदारी है - यह प्रस्ताव संसार में जल्दी से जल्दी कैसे पहुंचे। "जल्दी" इसलिए आवश्यक है - क्योंकि धरती बीमार हो चुकी है, प्रदूषण छा गया है, अपराध-प्रवृत्ति बढ़ गयी है, अपने-पराये की दूरियां बढ़ गयी हैं।

आज की स्थिति में सभी देशों को यह चेतावनी हो चुकी है - इसी तरह हम चलते रहे तो धरती बचेगा नहीं! धरती को बचाना है तो मनुष्य का भ्रम-मुक्त, अपराध-मुक्त, और अपने-पराये की दीवारों से मुक्त होना आवश्यक है। अधिकाँश लोग धरती को बचाने के पक्ष में हैं। इने-गिने लोग ही धरती को न बचाने के पक्ष में होंगे। धरती को बचाने के लिए मानव-चेतना के प्रस्ताव को हरेक व्यक्ति के पास ले जाने की ज़रूरत है।

इस प्रस्ताव को स्वीकारने में वृद्ध पीढ़ी को सबसे ज्यादा तकलीफ है, प्रौढ़ पीढ़ी को उससे कम, कौमार्य पीढ़ी को उससे कम, और बाल्य- पीढ़ी को सबसे कम तकलीफ है। यह हमारे सर्वेक्षण में आया है। तकलीफ का कारण है - उनके पूर्वाग्रह और पूर्वाभ्यास।

विज्ञान-शिक्षा के लोकव्यापीकरण क्रम में सभी देशों में शिक्षा-संस्थाएं स्थापित हो चुके हैं। इस प्रस्ताव को शिक्षा-संस्थाओ में पहुंचाने की आवश्यकता है।

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

इस प्रस्ताव को शिक्षा-संस्थाओं में पहुंचाने का स्वरूप क्या होगा? इस प्रस्ताव को शुद्धतः पहुंचाने की आवश्यकता है। छत्तीसगढ़ में राज्य-शिक्षा संस्थानों में इस प्रस्ताव को समझाने की शुरुआत की गयी - जिससे "सफलता" की शुरुआत हुई। शिक्षा-संस्थानों के अध्यापक और अधिकारी दोनों इससे सहमत हुए। सहमत होने के बाद अध्ययन शुरु किये। अध्यापकों द्वारा बच्चों तक यह शिक्षा पहुँचने लगेगी तो हम इस बात का प्रमाण हुआ मानेंगे। यदि छत्तीसगढ़ में यह पूरा पहुँचता है तो आगे दूसरे राज्यों में भी पहुंचेगा।

- अनुभव शिविर, अमरकंटक - जनवरी 2010 - में बाबा **श्री नागराज शर्मा** के उदबोधन से

२. चेतना विकास मूल्य शिक्षा का लघु प्रस्ताव

यह प्रस्ताव अभ्युदय (सर्वतोमुखी समाधान के अर्थ में) के संदर्भ में है, जिसका प्रत्यक्ष रुप प्रतिभा एवं व्यक्तित्व का संतुलित उदय है। यह आपकी स्वीकृति हेतु प्रस्तुत है।

मानवीय शिक्षा नीति का आधारभूत मध्यस्थ दर्शन, विकास के क्रम में वास्तविकताओं के आधार पर निःसृत जीवन दर्शन है जिसमें द्वंधात्मक भौतिकवाद के स्थान पर समाधानात्मक भौतिकवाद, संघर्षात्मक जनवाद के स्थान पर व्यवहारात्मक जनवाद, रहस्यात्मक अध्यात्मवाद के स्थान पर अनुभवात्मक अध्यात्मवाद प्रतिपादित हुआ है। इसी में सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक-राज्यनिती का विश्लेषण है। यह भौतिक समृद्धि एवं बौद्धिक समाधान को बोधगम्य एवं हृदयंगम कराता है। जिसके लिए मानव में चिर प्रतीक्षा रही है। यही "विकल्प" है।

इस प्रस्ताव के संबंध में आपके द्वारा उठाए गए कदम एवं की गई प्रक्रिया की जानकारी अविलंब प्रदान कर अनुग्रहित करें।

भवदीय

ए. नागराज शर्मा

अमरकंटक

www.madhyasth-darshan.info – Information Portal

2.1 मानवीय शिक्षा-नीति का प्रारूप

1. **आधार –**

1.1 यह प्रारूप मध्यस्थ दर्शन (सह-अस्तित्व वाद) पर आधारित है। यह दर्शन चार भागों में है-

1. मानव व्यवहार दर्शन
2. मानव कर्म दर्शन
3. मानव अभ्यास दर्शन
4. मानव अनुभव दर्शन

2. **मानवीय शिक्षा प्रवर्तन कारण-**

2.1 वर्तमान में मानव में पाई जाने वाली सामाजिक (धार्मिक), आर्थिक एवं राज्यनैतिक विषमताएं ही समरोन्मुखता का कारण है।

3. **प्रस्तावना-**

जीव चेतना से मानव चेतना में परिवर्तन

3.1 मानवीयता की सीमा में धार्मिक (सामाजिक), आर्थिक, राज्यनैतिक समन्वयता रहेगी, क्योंकि प्रत्येक मानव प्राप्त अर्थ का सदुपयोग एवं सुरक्षा चाहता है, अस्तु अर्थ की सदुपयोगात्मक नीति ही धर्म नीति, सुरक्षात्मक नीति ही राज्यनीति है और साथ ही अर्थ के सदुपयोग के बिना सुरक्षा एवं सुरक्षा के बिना सदुपयोग सिद्ध नहीं है। इसी सत्यतावश मानव धार्मिक, आर्थिक, राज्यनैतिक पद्धति व प्रणाली से सम्पन्न होने के लिए बाध्य है।

4. **उद्देश्य-**

4.1 मानवीयता पूर्ण जीवनशैली को स्थापित करना।

4.2 मानवीयता की अक्षुण्णता हेतु मानवीय संस्कृति, सभ्यता तथा उसकी स्थापना एवं संरक्षण हेतु विधि व व्यवस्था का अध्ययन कराना है। मानव इससे मानव के चारों आयामों (व्यवसाय, व्यवहार, विचार एवं अनुभूति) तथा पाँचों स्थितियों (व्यक्ति, परिवार, समाज, राष्ट्र एवं अंतर्राष्ट्र) की एक सूत्रता, तारतम्यता एवं अनन्यता प्रत्यक्ष हो सकेगी। फलस्वरूप समाधानात्मक भौतिकवाद, व्यवहारात्मक जनवाद एवं अनुभवात्मक अध्यात्मवाद मानव जीवन में चरितार्थ एवं सर्वसुलभ हो सकेगा। यही प्रत्येक मानव की प्रत्येक स्थिति में बौद्धिक समाधान एवं भौतिक समृद्धि है और साथ ही यह मानव का अभीष्ट भी है।

4.3 व्यक्तित्व एवं प्रतिभा के संतुलित उदय को पाना।

4.4 समस्त प्रकार की वर्ग भावनाओं को मानवीय चेतना में परिवर्तन करना।

4.5 सहअस्तित्व एवं समाधानपूर्ण सामाजिक चेतना को सर्वसुलभ करना।

4.6 प्रत्येक व्यक्ति जन्म से ही न्याय का याचक है एवं सही करना चाहता है। उसे न्याय प्रदायी क्षमता तथा सही करने की योग्यता प्रदान करना।

4.7 प्रत्येक मानव जीवन में अनिवार्यता एवं आवश्यकता के रूप में पाये जाने वाले बौद्धिक समाधान एवं भौतिक समृद्धि की समन्वयता को स्थापित करना।

4.8 शिक्षा प्रणाली, पद्धति एवं व्यवस्था की एक सूत्रता को मानवीयता की सीमा में स्थापित करना।

4.9 प्रकृति में विकास क्रम, विकास, जागृति क्रम, जागृति एवं इतिहास के आनुषंगिक मानव, मानव जीवन लक्ष्य, जीवन में समाधान तथा जीवन के कार्यक्रम को स्पष्ट तथा अध्ययन सुलभ करना।

4.10 विश्वविद्यालय, महाविद्यालय, विद्यालय, शाला एवं शिक्षा मंदिरों की गुणात्मक एकता एवं एक सूत्रता को स्थापित करना।

4.11 उन्नत मनोविज्ञान के संदर्भ में निरंतर शोध एवं अनुसंधान व्यवस्था को प्रस्थापित करना।

4.12 प्रत्येक विद्यार्थी और व्यक्ति को अखंड समाज के भागीदार के रूप में प्रतिष्ठित करना।

4.13 शिक्षक, शिक्षार्थी एवं अभिभावक की तारतम्यता को व्यवहार शिक्षा के आधार पर स्थापित करना।

4.14 विगत, वर्तमान, एवं आगत पीढ़ी की परस्परता के प्रत्येक स्तर में तारताम्यता, एकसूत्रता, सौजन्यता, सहकारिता, दायित्व तथा कर्तव्यपालन योग्य क्षमता का निर्माण करना।

4.15 मानवीय संस्कृति, सभ्यता, विधि एवं व्यवस्था संबंधी शिक्षा को सर्वसुलभ बनाना।

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

4.16 प्रत्येक मानव में अधिक उत्पादन एवं कम उपभोग योग्य क्षमता को प्रस्थापित करना।

4.17 व्यक्तित्व व प्रतिभा सम्पन्न स्थानीय व्यक्तियों के संपर्क में शिक्षार्थियों एवं शिक्षकों को लाने की व्यवस्था प्रदान करना।

5. कांक्षा

5.1 वर्तमान बिन्दु में वास्तविकताएं यह स्पष्ट करती है कि प्रत्येक व्यक्ति को ऐसी न्यूनतम बुनियादी शिक्षा प्राप्त हो जिससे मानवीयता की सीमा में व्यक्ति की स्वतन्त्रता, स्वत्व, अधिकार, सामाजिक दायित्व एवं कर्तव्य क्षमता को स्थापित कर सके ताकि व्यक्तित्व और प्रतिभा का संतुलित उदय हो सके। इसके फलस्वरूप सामाजिक समानता, अधिक उत्पादन, कम उपभोग पूर्वक अर्थ विषम प्रभाव का उन्मूलन होगा और साथ ही प्रत्येक व्यक्ति सामाजिक अभ्युदय में भागीदार हो सकेगा।

6. नीति

6.1 शिक्षा प्रणाली एवं पद्धति राष्ट्रीय सीमावर्ती रहेगी।

6.2 जाति, वर्ग एवं संप्रदाय विहीन अखंड समाज को पाने के लिए सार्वभौमिक सामाजिक, (धार्मिक) आर्थिक एवं राज्यनैतिक नीति रहेगी।

6.3 नियति क्रम में पाई जाने वाली प्रकृति के विकास एवं इतिहास में मानव जीवन, जीवनीक्रम एवं जीवन के कार्यक्रम को अनुसरण करने वाली नीति रहेगी जो समाधानात्मक भौतिकवाद, व्यवहारात्मक जनवाद, एवं अनुभवात्मक अध्यात्मवाद पर आधारित है।

6.4 प्राकृतिक एवं वैकृतिक ऐश्वर्य के संपत्तिकरण नीति के स्थान पर साधनीकरण करने वाली नीति रहेगी।

6.5 ग्रामीण एवं शहरी जीवन की दूरी मिटाने वाली ग्रामीण जीवन में जो दयनीय भावनाएं है उसे समाप्त करने वाली एवं ग्रामीण जीवन के प्रति गौरव एवं अनिवार्यता को स्थापित करने वाली नीति रहेगी।

6.6 शिक्षा में औपचारिकता गौण रहेगी, उसके स्थान पर प्रायोगिकता एवं व्यवहारिकता प्रधान शिक्षा नीति रहेगी।

7. वस्तु विषय प्रणाली

7.1 शिक्षा के सभी विषयों को सभी स्तरों में उद्देश्य की पूर्ति हेतु बोधगम्य एवं सर्व सुलभ बनाने, सार्वभौम नीतित्रय (धार्मिक, आर्थिक, राज्यनैतिक) में दृढ़ता एवं निष्ठा स्थापित करने तथा वर्तमान में पढ़ाये जाने वाले प्रत्येक विषय को समग्रता से संबद्ध रहने के लिए:-

1. विज्ञान के साथ चैतन्य पक्ष का।
2. मनोविज्ञान के साथ संस्कार पक्ष का।
3. दर्शनशास्त्र के साथ क्रिया पक्ष का।
4. अर्थशास्त्र के साथ प्रकृतिक एवं वैकृतिक ऐश्वर्य की सदुपयोगात्मक एवं सुरक्षात्मक नीति पक्ष का।
5. राज्यनीति शास्त्र के साथ मानवीयता के संरक्षणात्मक तथा संवर्धनात्मक नीतिपक्ष का।
6. समाज शास्त्र के साथ मानवीय संस्कृति व सभ्यता पक्ष का।
7. भूगोल और इतिहास के साथ मानव तथा मानवीयता का।
8. साहित्य के साथ तात्विक पक्ष का अध्ययन अनिवार्य है क्योंकि इसके बिना इसकी पूर्णता सिद्ध नहीं होती।

7.2 इतिहास में उन मौलिक घटनाओ व प्रेरणाओ को वरीयता के रूप में अध्ययन करने की व्यवस्था रहेगी जो मानवीयता पूर्ण जीवन के लिए प्रेरणादायी होगी।

7.3 शिक्षा के द्वारा उस वस्तु एवं विषय का प्रबोधन किया जाएगा जिसका प्रत्यक्ष रूप व्यवहार, व्यवसाय एवं व्यवस्था होगी।

8. पद्धति

8.1 प्रयोग, व्यवहार एवं अनुभवपूर्वक सिद्ध होने वाली शिक्षा पद्धति रहेगी।

8.2 प्रारम्भिक शिक्षा पाँच वर्ष की आयु के अनंतर आरंभ होगी।

शिक्षा का स्तर समय व अवधि

1.	प्रारंभिक शिक्षा	5 वर्ष
2.	पूर्व माध्यमिक शिक्षा	3 वर्ष
3.	उच्चतर मध्यमिक शिक्षा	3-4 वर्ष

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

4. स्नातक 3 वर्ष
5. स्नातकोत्तर 2 वर्ष

शिक्षा की उचित अवधि सोलह वर्ष रहेगी।
अनुसंधान एवं आविष्कार विषय वस्तु अनुसार।
प्रशिक्षण व विशिष्ट शिक्षा- विषय वस्तु के अनुसार रहे।

9. शिक्षा की समग्रता

9.1 शिक्षा की पूर्णता केवल निपुणता, कुशलता एवं पांडित्य में ही है जो आर्थिक, धार्मिक, राज्यनीति को स्पष्ट करती है।

9.2 स्तर के अनुसार पढ़ाने का समय तथा समय खंड तदानरूप रहना आवश्यक है, वह निम्न प्रकार है:-

स्तर	प्राथमिक	पूर्व माध्य.	उच्च माध्य.	स्नातक	स्नातकोत्तर
समय खंड	30 मि.	40 मि.	50 मि.	1 घंटा	1 घंटा
समय खंड स.	6	6	6	7	7
पढ़ाने का दैनिक समय	3 घंटा	4 घंटा	5 घंटा	7 घंटा	7 घंटा
खेलने का दैनिक समय	3 घंटा	2.30 घंटा	2 घंटा	1 घंटा	1 घंटा
योग समय	6 घंटा	6.30 घंटा	7 घंटा	8 घंटा	8 घंटा

9.3 निरीक्षण-परीक्षण क्रम पद्धति:-

प्राथमिक	पूर्व माध्यमिक	उच्च माध्यमिक	स्नातक	स्नातकोत्तर
उपस्थिति	उपस्थिति	उपस्थिति	उपस्थिति	उपस्थिति
खेल	पठन	निर्माण	व्यक्तित्व	व्यक्तित्व
बोल	लेखन	आचरण	आचरण	आचरण
लेखन	खेल	पठन	लेखन /उत्पादन	लेखन /उत्पादन
आज्ञा पालन	निर्माण	लेखन	निबंध-पठन	प्रबंध पठन
आचरण	आचरण	खेल	कला	कला
कला	कला	कला	खेल	खेल

9.4 शिक्षा के स्तर के अनुसार प्रत्येक शिक्षक की क्षमता के प्रति अनुमान विद्यार्थियों की संख्या सहित, अधिकतम न्यूनतम के रूप में निम्न है:-

प्राथमिक		पूर्व माध्यमिक		उच्च. माध्यमिक		स्नातक		स्नातकोत्तर	
अधिकतम	न्यूनतम	अधिकतम	न्यूनतम	अधिकतम	न्यूनतम	अधिकतम	न्यूनतम	अधिकतम	न्यूनतम
30	15	40	20	50	25	60	30	80	40

यह अनुमान मनोविज्ञान पर आधारित है।
इसके अतिरिक्त शिक्षा के स्वत्व में एक ऐसी व्यवस्था रहेगी जिसमें साहस, शौर्य एवं प्रतिभा को पुरस्कार तथा पारितोषिक पूर्वक प्रोत्साहित करने का प्रावधान रहेगा और साथ ही इन सबका मानवीयता की सीमा में उपादेयी सिद्ध होना अनिवार्य होगा।

10. पात्रता की निर्णय पद्धति

10.1 प्रत्येक स्तर में शिक्षक, प्रशिक्षक एवं व्यवस्थापक का उनके व्यक्तित्व, उत्पादन क्षमता, शिक्षण एवं प्रशिक्षण की क्षमता तथा स्वास्थ्य एवं आयु पर पात्रता को निर्धारित करने वाली पद्धति रहेगी।

10.2 प्रत्येक कार्यकर्ता अपने निकटतम वरीय अधिकारी के आदेशनुसार कार्य करेगा।

10.3 प्रत्येक कार्यकर्ता द्वारा किए गए कार्य को दैनंदिनी में आदेश एवं संदर्भ सहित लिखेगा। यह दैनंदिनी उसकी कार्य कुशल दक्षता को स्पष्ट करेगी फलत: अग्रिम पात्रता उसके आधार पर सिद्ध होगी। मौखिक आदेश के प्रमाण में आदेशकर्ता दैनंदिनी पर हस्ताक्षर करेगा। पात्रता अनुरूप नियुक्तियाँ, प्रतिफल मान, उन्नति, प्रोत्साहन, पारितोषिक एवं सम्मान, पूरे राष्ट्र में एक सा रहेगा।

11. प्रारम्भिक शिक्षा

11.1 प्रत्येक विद्यार्थी को प्राथमिक शिक्षा प्राप्त करने का अवसर एवं व्यवस्था बिना भेदभाव के रहेगी।

11.2 प्रत्येक निर्धन विद्यार्थी को वित्तीय सहायता का प्रावधान रहेगा जिससे उनमें निर्धनता का स्खलन न हो एवं व्यक्तित्व और प्रतिभा के विकास के लिए अवसर पूर्णतया एक सा प्राप्त हो, यह व्यवस्था शिक्षा के प्रत्येक स्तर में रहेगी।

11.3 पाँचवी कक्षा के शिक्षा पर्यंत प्रधानत: कृतज्ञता, धैर्य, साहस, उदारता, उत्तम आचरण एवं उद्देश्य की ओर निश्चित दिशादायी शिक्षा सम्पन्न होगी।

11.4 प्रत्येक विद्यार्थी को इस स्तर में खेल, बोल, लेखन, पठन, कला-निर्माण एवं उत्पादन में प्रवृत करने वाली शिक्षा समाविष्ट रहेगी।

11.5 प्रारम्भिक शिक्षा में ही प्रारम्भिक गणित की शिक्षा भी सम्मिलित रहेगी।

11.6 व्यवहार एवं आचरण संबंधी प्रारम्भिक शिक्षा को मानवीयता की सीमा में प्रदान किया जावेगा।

11.7 प्रत्येक विद्यार्थी की क्षमता एवं संभावना का प्रमाणीकरण उनके आचार्यों द्वारा निरीक्षण पूर्वक ही होगा।

12. पूर्व माध्यमिक शिक्षा

12.1 पूर्व माध्यमिक शिक्षा में व्यवहार-विज्ञान एवं भौतिक विज्ञान का प्रारूप समाविष्ट रहेगा। व्यवसाय व उत्पादन में दिशा - दर्शन रचना एवं कला-प्रदर्शन की क्षमता को विकसित करने की शिक्षा रहेगी।

12.2 इसी स्तर में व्यवसाय, व्यवहार, विचार एवं अनुभूति की समन्वयात्मक शिक्षा रहेगी।

13. उच्चतर माध्यमिक शिक्षा

13.1 उच्चतर माध्यमिक कक्षा में प्रवेशरत विद्यार्थियों की क्षमता, योग्यता, पात्रता, संभावना एवं आचरण प्रमाणीकरण के आनुषंगिक विषयों के चयन का अवसर रहेगा।

13.2 इस स्तर की शिक्षा, व्यवहारिक, स्थायी मूल्यवत्ता, एवं उसकी अनिवार्यता को आचरण एवं व्यवहार पूर्वक स्पष्ट करने वाली तथा व्यवसायिक मूल्यों की उपयोगिता एवं उसकी आवश्यकता को प्रयोग पूर्वक सिद्ध करने वाली रहेगी।

13.3 स्वभाव, आचरण एवं प्रवृतियों का मूल रूप संस्कार ही है। इसके गुणात्मक परिवर्तन-प्रक्रिया का मानवीयता पूर्ण पद्धति से सर्वसुलभ बनाने की शिक्षा रहेगी जिससे व्यक्तित्व का निर्माण होगा। इसका प्रत्यक्ष रूप बहू-भोग वादी प्रवृत्ति से परिवर्तित होकर संयत भोग में विश्वास एवं दृढ़ता से परिपूर्ण होना है क्योंकि "स्वभाव ही आचरण के रूप में प्रत्यक्ष होता है, स्वभाव का गुणात्मक परिवर्तन ही संस्कार परिवर्तन है।"

13.4 मानवीयता की सीमा में व्यवहारिक एवं व्यवसायिक कुशलता तथा निपुणता प्रदान करने की शिक्षा रहेगी।

13.5 उच्चतर माध्यमिक शिक्षा के अंत तक व्यवहार दक्ष एवं व्यवसाय में स्वावलंबन एवं परिश्रम के प्रति निष्ठा जागृत करने वाली शिक्षा रहेगी जिसको प्रोत्साहित करने के लिए जो व्यवस्था रहेगी वह उनके व्यक्तित्व एवं उत्पादन क्षमता पर भी निर्भर रहेगी।

14. उच्च शिक्षा

14.1 अनिवार्य विषय के अतिरिक्त स्नातक शिक्षा के विषयों का चयन रहेगा।

14.2 स्नातक शिक्षा में कम से कम तीन विषयों का चयन एच्छिक रहेगा।

14.3 स्नातक शिक्षा में दर्शन शास्त्र अनिवार्य रूप में रहेगा।

14.4 दर्शनशास्त्र में प्रमुखत: सामाजिक (धार्मिक), आर्थिक एवं राज्यनैतिक तथ्यों का बोधगम्य अध्ययन कराया जाएगा।

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

14.5 व्यक्तित्व की महत्ता, उत्पादन एवं उसमें संभवना की विशालता, आचरण की विशिष्टता तथा अपरिहार्यता के परिपूर्ण ज्ञान का अध्ययन किया जाएगा।

15. स्नातकोत्तर

15.1 अनिवार्य विषय के अतिरिक्त स्नातकोत्तर शिक्षा के विषय का चयन एच्छिक रहेगा।

15.2 स्नातकोत्तर शिक्षा में कम से कम 2 विषय रहेंगे जिसमें स्नातकीय स्तर की उत्तीर्णता प्राप्त होगी।

15.3 स्नातकोत्तर शिक्षा में दर्शन शास्त्र अनिवार्यतम रूप में रहेगा।

15.4 दर्शनशास्त्र में पूर्णतया समाधानात्मक भौतिकवाद, व्यवहारात्मक जनवाद एवं अनुभावात्मक अध्यात्मवाद का अध्ययन रहेगा।

15.5 उत्पादन एवं व्यक्तित्व के संतुलनात्मक व समन्वयात्मक क्षमता को उद्घाटित करने योग्य अध्ययन होगा।

15.6 मानवीयता की सीमा में विधि शिक्षा का अध्ययन होगा।

16. तकनीकी शिक्षण-

16.1 उत्पादन एवं निर्माण शक्ति की विपुलता के लिए निपुणता एवं कुशलता को पूर्णतया प्रशिक्षित कराने के लिए समृद्ध प्रणाली, व्यवस्था एवं अध्ययन रहेगा जिससे मानव की समान्य आकांक्षा एवं महत्वाकांक्षा से संबन्धित वस्तुओं का निर्माण सुगमता पूर्वक हो सके।

16.2 तकनीकी शिक्षण के साथ सामाजिकता तथा व्यक्तित्व में निष्ठा को व्यवहारिक रूप देने की व्यवस्था एवं प्रणाली अध्ययन के रूप में रहेगी।

16.3 शिक्षा के इस स्तर में अतिमानवीयता पूर्ण जीवन की संभावना को स्पष्ट करने योग्य अध्ययन रहेगा।

16.4 प्रत्येक विद्यार्थी को उत्पादन क्षमता में निष्णात बनाने के लिए अध्ययन होगा, जिससे अधिक उत्पादन एवं कम उपभोग सम्पन्न हो सके।

16.5 तकनीकी अध्ययन के साथ व्यवहारिक अध्ययन अनिवार्य रूप में रहेगा जिससे प्रत्येक व्यक्ति उद्यमशील एवं सामाजिक सिद्ध हो सके।

16.6 कृषि, उद्योग व स्वास्थ्य संबंधी पूर्ण तकनीकी शिक्षा प्रत्यक्ष रूप से रहगी न कि औपचारिक रूप में रहेगी।

17. प्रौढ़ शिक्षा

17.1 साक्षरता के साथ ही मानवीयतापूर्ण जीवन की सीमा में आचरण, व्यवहार एवं उत्पादन में प्रोत्साहन प्रदान करने वाली प्रणाली रहेगी।

17.2 प्रौढ़ शिक्षा में भी कला एवं व्यक्तित्व को प्रोत्साहित करने वाली पद्धति रहेगी।

17.3 जनजाति की पठन क्षमता के निर्माण के लिए उनके अनुकूल समय में ही शिक्षा प्रदान करने की व्यवस्था रहेगी। साथ ही प्रकृति के विकास एवं इतिहास तथा मानव, मानव जीवन एवं जीवन के कार्यक्रम संबंधी प्रणाली रहेगी।

17.4 शिक्षा व्यवहार, व्यवसाय तथा व्यक्तित्व की समन्वयता के तारतम्य में रहेगी।

17.5 व्यक्तित्व एवं कला की वरीयता रहेगी साथ ही साहसिकता के पुरुस्कार की व्यवस्था रहेगी।

17.6 परस्पर संबंध में स्थापित मूल्यों को अध्ययन कराने की व्यवस्था रहेगी, ताकि वर्ग विहीन समाज भावना स्थापित हो सके।

17.7 स्थानीय संपदा का उपयोग करने योग्य क्षमता निर्माण करने की व्यवस्था रहेगी ताकि आर्थिक विषमता दूर हो सके एवं आत्मनिर्भर हो सके।

17.8 स्थानीय समस्या (व्यावहारिक एवं व्यावसायिक) का सर्वेक्षण पूर्वक समाधान हेतु पर्याप्त व्यवस्था रहेगी।

17.9 शिक्षा में व्यवसाय, व्यवहार, विचार एवं अनुभूति को एकसूत्रता का पूर्णतया ध्यान रहेगा।

17.10 प्रौढ़ शिक्षा में व्यावसायिक आत्मनिर्भरता तथा व्यक्तित्व एवं ग्राम जीवन में विश्वास उत्पन्न करने की व्यवस्था रहेगी।

17.11 ग्रामोद्योग एवं कुटीर उद्योग संबंधी सार्थक शिक्षा की व्यवस्था रहेगी।

18. स्नातक पूर्व

18.1 माध्यमिक शिक्षा के अनंतर दो वर्ष या उससे कम समय में दी जाने वाली समस्त शिक्षा स्नातक पूर्व में गण्य होगी।

18.2 इस शिक्षा में उत्पादन क्षमता या उत्पादन में सहायक क्षमता में गुणात्मक रूप प्रदान करने योग्य व्यवस्था रहेगी और साथ ही व्यावहारिक शिक्षा का समावेश रहेगा जिससे व्यक्तित्व सर्वसुलभ हो सके।

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

19. शोध अनुसंधान

19.1 स्नातकोत्तर शिक्षा के अनंतर शोध एवं अनुसंधान की व्यवस्था रहेगी।

19.2 अनुसंधान कर्ता का विषय एच्छिक रहेगा।

19.3 व्यवहार व्यवसाय एवं स्वास्थ्य की सीमा में शोध अनुसंधान प्रयास सम्पन्न होगा।

19.4 वैयक्तिक रूप में किए गए शोध व अनुसंधान के स्वागत हेतु व्यवस्था होगी। इस व्यवस्था में वर्तमान में पाई जाने वाली व्यवहारिक एवं व्यावसायिक समस्याओं के परिहार संबंधी उपलब्धि रहेगी।

19.5 व्यावहारिक अनुसंधान अखंड समाज के परिप्रेक्ष्य में तथा व्यावसायिक अनुसंधान मानव की सामान्य आकांक्षाओं एवं महत्वाकांक्षाओं की सीमा में रहेंगे जो शिक्षा और व्यवस्था में समाविष्ट होने योग्य होंगे।

19.6 मानवीयता से परिपूर्ण होने के अनंतर अतिमावीयता से परिपूर्ण होने की संभावना है, इसलिए अनुसंधान एवं शोध की अपार संभावना है।

20. शिष्ट मण्डल-

20.1 प्रत्येक राष्ट्रीय स्तर में एक शिष्ट मण्डल रहेगा, जिसमें शोध एवं अनुसंधान कर्ताओं का समावेश रहेगा। यही राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय शिष्टमंडल शिक्षा नीति में प्रणाली तथा पद्धति की पूर्णता एवं दृढ़ता के प्रति दायित्व वहन का सजगता पूर्वक निर्वाह करेगा।

20.2 यही मण्डल वैध सीमा में शिक्षा संस्थाओं के दायित्वों का निर्धारण, दिशा-निर्देश, पद्धति तथा प्रणाली संबंधी आदेश देने का अधिकारी होगा।

20.3 इनके द्वारा दी गई प्रस्तावनाएं शासन- सदन द्वारा सम्मति पाने के लिए बाध्य रहेगी।

20.4 शिक्षा संबंधी गुणात्मक परिवर्तन के लिए उपयुक्त प्रस्तावनाधिकार इसी मंडल में समाहित रहेगा।

20.5 व्यक्तिगत रूप में प्राप्त प्रस्तावनाओं को अवगाहन करने की व्यवस्था रहेगी। साथ ही उनके लिए सम्मान व पुरस्कार प्रदान करने की व्यवस्था भी रहेगी। जिससे व्यक्तिगत प्रतिभा के प्रति विश्वास हो सके।

20.6 प्रत्येक राष्ट्र का शिष्ट मंडल मानवीयता की सीमा में ही शिक्षा नीति, प्रणाली एवं पद्धति का प्रस्ताव करेगा जिससे मंडलों में परस्पर विरोध न हो सके।

20.7 शिक्षा की सार्वभौमिकता की अक्षुण्णता के लिए अंतर्राष्ट्रीय शिष्ट मंडल रहेगा जिससे अखंड समाज की निरंतरता बनी रहे।

21. व्यवस्था –

21.1 प्रत्येक शिक्षण संस्था अपने क्षेत्र में प्रौढ़ व्यक्तियों को साक्षर बनाने तथा प्रत्येक बालक-बालिका को शिक्षा प्रदान करने के लिए उत्तरदायी होगा।

21.2 प्रत्येक पद में दायित्व शिष्ट मंडल द्वारा निर्धारित रहेगा।

21.3 संस्थाओं का दायित्व व निर्वाह पद्धति - प्रत्येक शिक्षण संस्था अपने कार्यक्षेत्र में पाई जाने वाली सामाजिक, आर्थिक, राज्यनैतिक और व्यवहारिक व्यवस्था की परस्परता में समस्याओं का सर्वेक्षण करने की व्यवस्था करेगी। साथ ही वैध प्रणाली पद्धति नीति व व्यवस्था का पालन करने के लिए उत्तरदायी रहेगी।

21.4 स्थानीय स्थिति के चित्रणाधिकार का दायित्व स्थानीय संस्था का होगा।

21.5 प्रत्येक सर्वेक्षण पूर्ण चित्रण जिस स्तर के अधिकारियों द्वारा सम्पन्न किया जाएगा उसका परीक्षण करने का अधिकार उनसे वरिष्ठ अधिकारी को होगा। इस प्रस्ताव के अध्ययन के लिए मध्यस्थ दर्शन सह-अस्तित्ववाद प्रस्तुत हो चुके है जिसका कार्यक्रम रायपुर अछोटी में साकार होने की व्यवस्था है। जिससे ही-

भूमि स्वर्ग होगी । मानव ही देवता होंगे ।।

धर्म सफल होगा । नित्य मंगल ही होगा ।।

ए. नागराज शर्मा, श्री भजनाश्रम, श्री नर्मदांचल , अमरकंटक, जिला-शहडोल (म. प्र.)

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

3. चेतना विकास मूल्य शिक्षा भूमिका

5-6 वर्ष के बच्चे जब विद्यालय में आते हैं तो भाषा बोलना जानते हैं। सामान्य बातों का अर्थ समझ लेते हैं। अपने आस पास घर, खेत, आदि-पर्यावरण को पहचानते हैं। मौखिक रूप में बहुत कुछ सीख, समझ और अभिव्यक्त कर सकते हैं। प्रारंभिक कक्षाओं में अलिखित विधि से ही शिक्षक उन्हें शिक्षा देते हैं।

लिखना और पढ़ना एक कला है। समझदारी के साथ इनका सदुपयोग अन्यथा दुरूपयोग होता है। लिखना और पढ़ना अपने आप में समझदारी नहीं है। अत: बालकों को उन्हें समझदार बनाने के लिए मौखिक कलाओ का प्रयोग किया जाता है तथा साथ ही उन्हें लिखना और पढ़ना भी सिखाया जाता है।

मूल्यांकन करते समय भी लिखने और पढ़ने की कला को ही परखा जाता है जानकारी और समझदारी को मौखिक रूप से देखा जाता है। बच्चे और बड़े भी जितना लिख सकते है उससे कहीं अधिक जानते हैं। ठीक से न लिख पाने का अर्थ यह कदापि नहीं है कि जानकारी भी नहीं है।

कला की दृष्टि से लिखना पढ़ना अच्छी कला है, परन्तु और भी अनेक कलाएँ है। अभ्यास के द्वारा अधिक से अधिक कलाओ में निपुणता और कुशलता का उदय कराया जाना चाहिए। सभी कलाएँ समझदार व्यक्ति के आभूषण हैं। अत: चेतना विकास मूल्य शिक्षा का मूल उद्देश्य व्यक्ति को समझदार बनाना है। समझदारी केवल जीवन विद्या (प्रणेता श्रद्धेय श्री ए नागराज जी) द्वारा प्रस्तुत शिक्षा और व्यवस्था के विकल्प से आती है, ऐसी हमारी मान्यता है।

जीवन विद्या के लिए लिखना और पढ़ना अनिवार्य नहीं है। जीवन विद्या के साथ साथ बच्चों को लिखना-पढ़ना सिखाते जाते हैं, दूसरी कलाओ को भी सिखाते हैं। बच्चों की समझदारी को इन कलाओ के द्वारा अभिव्यक्त कराते जाते हैं।

इन कलाओ को क्रमिक शिक्षा पद्दति से इस तरह सिखाया जाता हैं कि बालक स्वयं की भावनात्मक आवश्कता, परिवार संबंध, समाज सम्बन्ध और प्रकृति के सम्बन्ध व मुल्यों के प्रति जागृत होता चला जाए और परिवार मूलक स्वराज्य व्यवस्था में भागीदार होने योग्य होता जाये।

उदाहरण के लिए 'अ' अक्षर की ध्वनि को लें, अभी इसकी पहचान के लिए प्राय: "अमरूद", "अनार" आदि जड़ वस्तुओ को प्रयोग किया जाता है, इन वस्तुओ को बालक अपने आस-पास देखते ही हैं। कई पुस्तकों में तो अनजाने संकेत भी दिए जाते हैं। यथा उत्तर भारत के गाँव में "यहूदी" या "ऋषि" या शहरी बालकों के लिए "ईख", "ईश्वर" आदि। बच्चे इन शब्दों का सही अर्थ नहीं जानते।

अभिभावक विद्यालय, अछोटी में "अ" को "अम्मा", "अच्छा" जैसे शब्दों से ध्वनित करते हैं। मधुर-मधुर गेय पदों में बालकों के साथ इन्हें गाया जाता है। इन्हीं को गाते गाते बच्चे अपने घर भी चले जाते हैं। अम्मा के साथ अपने संबंध को पहचानते हैं, "स्नेह", "ममता" आदि मूल्यों का प्रवाह होता है। इस प्रकार देखते देखते ही घर परिवार में मूल्य बहने लगते हैं। प्रसन्नता और उत्साह भर जाता है।

इस कार्य के लिए शिक्षक को बालक के सम्मुख माता-पिता और गुरु के रूप में प्रस्तुत होना पड़ता है। विश्वास, स्नेह, ममता और वात्सल्य के माध्यम से सौजन्यता, निष्ठा, उदारता तथा सहजता व प्रमाणिकता पूर्वक संबंध स्फूर्त होता है। इससे बालक में भी विश्वास, अभय और उत्साह जागृत होता जाता है। उत्साहपूर्वक अभय और सौम्यता की अभिव्यक्ति की छटा देखते ही बनती है और गहरे तक तृप्ति का अनुभव होता है।

धीरे-धीरे लिखने,पढ़ने की कला में परिपक्व, होते जाते हैं तो इन कलाओ का भी प्रयोग करने लगते हैं, इससे अभिव्यक्ति अधिक प्रभावशाली और सौन्दर्यपूर्ण बनती जाती हैं।

किशोरावस्था में बालकों को व्यवसायिक कलाओ, प्रोद्योगिकी आदि की ओर प्रेरित किया जाता है। कुशल कारीगरो, वैज्ञानिकों, अभियंताओ और उद्यमियों के सानिध्य एवं मार्गदर्शन में विभिन्न व्यवसायों का परिचय एव अभ्यास कराया जाता हैं।

युवावस्था आते-आते मानव में समाधान, अभय और सहअस्तित्व के साथ-साथ समृद्धि के लिए उत्पादन, विनिमय और सदुपयोग के लिए स्पष्ट कार्यक्रम होता है। यही शिक्षा की पूर्णता है।

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

3.1 मानव संचेतनावादी शिक्षा संस्कार कक्षावार पाठ्यक्रम योजना

कक्षा – 1

1) भूमिका- प्रत्येक बालक में आज्ञापालन, अनुसरण, एवं सहयोग का होना पाया जाता है। शिक्षक - इनको समझकर प्रस्तुत होते हैं। इससे विद्यार्थी अपने लक्ष्य को पाने में सफल होते हैं।

2) शिक्षा का लक्ष्य- प्रत्येक विद्यार्थी को विचार में समाधान, व्यवहार में सामाजिक, व्यवसाय में स्वावलंबी प्रमाणित करना है।

1. विद्यालय के प्रति निष्ठा, विद्या के प्रति जिज्ञासा, एवं गुरु के प्रति कृतज्ञता उत्पन्न हो।
2. शरीर के अंग प्रत्यंग में सही तालमेल हो।
3. शरीर तथा जीवन में सह-अस्तित्व का निर्वाह हो।
4. जीवन शक्तियों की पहचान - (जैसे में आशा करता हूँ।) होना।
5. शरीर की स्वच्छता, परिवार तथा विद्यालय में कॉपी, बस्ता, आदि की व्यवस्था।
6. अक्षर बोध।
7. अंक बोध।
8. संबंधो का संबोधन पहचान, कथनी करनी की एकरूपता में संपूर्ण विश्वास।

3) वस्तु

1. विद्यार्थी विद्यालय को परिवार रूप में तथा गुरु को सम्बन्धी के रूप में पहचाने इसके लिए संपूर्ण प्रणाली एवं नीति का उपयोग शाला परिवार करेगा।
2. आसन, उचित बैठने का अभ्यास।
3. सम्बोधन, सहयोग, आज्ञापालन एवं नियंतार्ण अभ्यास द्वारा स्नेह, सम्मान, विशवास व्यक्त होना
4. सबंधों की पहचान और आशा विचार व इच्छा शक्ति की पहचान एवं प्रयोग करने का पाठ।
5. वस्तुओ की पहचान तथा उनका उपयोग का नियम बोध करना।
6. शरीर, उसकी स्वच्छता एवं स्वास्थ्य का पाठ।
7. अक्षर अभ्यास, शब्दों को लिखने का अभ्यास - कविताओ के माध्यम से शरीर - अव्यय, मानवीय गुण, स्वभाव, संबंध, कर्तव्य, दायित्व, आवश्यकता, उपयोगिता एवं प्रयोजन वादी शब्दों के साथ जैसे - अम्मा, आशा, आँख।
8. अंक बोध - हर गणना को वस्तु मूलक के आधार पर संपन्न करना।
   1 - 100 तक लिखना, पढना, बोलना, शरीर इन्द्रिय संबंध सहित संख्या बोध जैसे पांच उँगलियाँ, पांच ज्ञान इन्द्रियां।

4) शिक्षा प्रदान करने की विधि एवं उपाय-

1. आज्ञापालन एवं प्रोत्साहन।
2. सम्बन्धी के रूप में प्रस्तुत हो कर ममता और वात्सल्य के साथ।
3. मौखिक अभिव्यक्ति एवं शरीर के हाव-भाव के साथ अभिव्यक्ति पर विशेष ध्यान।
4. परिवार और समाज में आज्ञापालन, अनुसरण के अर्थ में जीने का अभ्यास करवाना।
5. कक्षा स्थली, श्यामपट, स्लेट, कॉपी, स्याही, आदि साधनों से, संभाषण, गीत, कविता, लेखों, चित्रों को पूर्णतया विश्वास समपन्न विधि से, बच्चों में शिक्षा को अर्पित कराना।

5) अध्यापकों की अर्हता

जीवन ज्ञान, अस्तित्व दर्शन ज्ञान, व मानवीयतापूर्ण आचरण संपन्न व्यक्ति, परिवार में भागीदारी करते हुए। परिवार सहज संबंधो की पहचान और मूल्यों का निर्वाह करता हुआ, मूल्यांकन क्षमता संपन्न व्यक्ति द्वारा इस पाठ्यक्रम को पढ़ना हमने स्वीकार कर लिया है, इसे प्रमाणित भी कर लिया है।

6) समय- 40 सप्ताह

शिक्षा - कक्षा में - 2 घंटे, खेल - मैदान में - 3 घंटे

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

7) **खेल**- स्वास्थ्य वर्धक, मैत्री एवं ज्ञानवर्धक, खेलों को खिलाना। जिसमे उत्साह और प्रसन्नता होना पाया जाता है।

8) **मूल्यांकन**-

अपने साधनों, पुस्तक आदि की सुरक्षा एवं सदुपयोग, उठना - बैठना - बोलना।

अक्षर एवं अंको की पहचान।

सहयोग, आज्ञापालन, अनुकरण आदि की ग्राह्यता का मूल्यांकन।

कक्षा – 2

1) **भूमिका**

कक्षा एक में बालक विद्यालय को परिवार के रूप में स्वीकार करता है। शिक्षकों के स्नेह को पा कर वह उत्सवित होता है। शिक्षा का सारा कार्यक्रम उसके लिए सुखप्रद हो जाता है। कक्षा 1 के वातावरण के फलस्वरूप विद्यार्थी में विश्वास का उदय होता है। यही विद्यार्थी को विद्या के लिए पात्र बना देता है।

2) **शिक्षा का लक्ष्य**

प्रत्येक विद्यार्थी को विचार में समाधानित, व्यवहार में सामाजिक, व्यवसाय में स्वावलंबी प्रमाणित करना जो स्वायत्त परिवार का मूल आधार है। इसके लिए -

1. संबंधो के प्रति जिज्ञासा परिवार के प्रति निष्ठा।
2. शरीर और जीवन के सह-अस्तित्व के प्रति जागृत करना।
3. मैं विचार करता हूँ, मैं कल्पनाशील हूँ, इस तथ्य को हृदयंगम करवाना।
4. कक्षा में परिवार संबंधो के साथ संबोधन।
5. आज्ञापालन में तत्परता।
6. विद्यालय परिवार के प्रति गौरव, विद्या के प्रति जिज्ञासा एवं निष्ठा, गुरुओं के प्रति विश्वास।
7. संबंधो की पहचान, मूल्यों का निर्वाह एवं मूल्यांकन।

3) **वस्तु**

1. धीरता, वीरता, उदारता को दृढ करने का तथा
2. पाठशाला परिवार के साथ मैत्री की घनिष्ठता एवं विश्वास को स्थापित करने का पाठ।
3. कक्षा में सफाई - स्वास्थ्य का पाठ।
4. जीवन का क्रिया स्वरुप पर पाठ।
5. आसन, व्यायाम, खेल।
6. परिवार के संबंधो पर पाठ।

शब्द-बोध - शब्दों के अर्थ खोजना, सही उच्चारण, शब्दों को जोड़ना, वाक्य बनाना, सही लिखना, पढना, मात्राओ का बोध, संबंधो में वर्तने वाली चरित्ररुपी पाठ जैसे - माता बच्चों को समय समय पर प्यार से सेवा करती है, बच्चे माँ का आज्ञा पालन करते हैं।

अंक बोध गणित - 1 से 1000 तक अदान-प्रदान करना, समय, नाप तौल, आकार प्रकार की पहचान, दिशा बोध।

पाठ्य सामग्रियों की पहचान उनकी उपयोगिता का बोध, धीरे-धीरे पौधों की पहचान उनका सामान्य उपयोग, इसी के साथ संख्या का विस्तार।

4) **शिक्षा प्रदान करने की विधि एवं उपाय-**

1. आज्ञापालन एवं प्रोत्साहन।
2. जीवन की रोशनी में ज्ञानेन्द्रियों कर्मेन्द्रियों में संचालन विधि पर ध्यान।
3. संबंध, मूल्य, मूल्यांकन, व्यवस्था और व्यवस्था में भागीदारी की निष्ठा एवं निरंतरता।
4. कक्षा स्थली, श्यामपट, स्लेट, कॉपी, स्याही आदि साधनों से विद्यार्थियों में स्वयं स्फूर्त कविता, गीत एवं संभाषण को प्रस्तुत करवाना।

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

5) अध्यापकों की अर्हता

स्वयं में व्यवस्था एवं व्यवस्था में भागीदारी होने के रूप में हम शिक्षकों की अर्हता को पहचान चुके हैं और इसके लिए प्रमाणित कर लिए हैं।

6) समय - 40 सप्ताह - शिक्षा - कक्षा में 3 घंटे।

7) खेल - परस्पर मैत्री एवं विश्वास निर्वाह के लिए तथा स्वास्थ्य एवं स्फूर्ति के लिए।

8) मूल्यांकन-

शब्दों एवं अर्थों के संबंध की पहचान का मूल्यांकन।

मात्राओं, शुद्ध लेखन, बोलना आदि का मूल्यांकन।

सहयोग, आज्ञापालन, अनुकरण की अर्हता का मूल्यांकन।

पुस्तक सामग्री, स्थान की सुरक्षा और सदुपयोग का मूल्यांकन।

कक्षा – 3

1) भूमिका

बालक में गुरु के प्रति सहज श्रद्धा का उदय होना देखा गया है। वह शिक्षक, स्नेह, वात्सल्य के साथ में प्रस्तुत हो विद्यार्थी का पूरक बन जाता है। वास्तव में विद्या संबंधों में ही बहती है।

2) शिक्षा का लक्ष्य

1. प्रत्येक बालक जन्म से न्याय का याचक होता है पर उसमे न्याय प्रदायी क्षमता नहीं होती। अत: न्याय प्रदायी क्षमता से संपन्न करना शिक्षा का लक्ष्य है।
2. सत्य बोध कराना।
3. सही कार्य व्यवहार करवाना।

अर्थात प्रत्येक विद्यार्थी को विचार में समाधानित, व्यवहार में सामाजिक, व्यवसाय में स्वावलम्बी प्रमाणित करना जो स्वायत्त परिवार का मूल आधार है। इसके लिए -

1. जीवन के चित्रण पक्ष पर बल।
2. संबंधों, मूल्यों, परिवार के अर्थ स्पस्ट करना।
3. मानव-मानव के बीच सह-अस्तित्व अर्थात धीरता को बोध कराने का उद्देश्य।
4. कक्षा साथियों में विश्वास स्थापित करना।
5. शरीर की सफाई, वस्त्र आदि का स्वयं ध्यान रखना।
6. जीवन ज्ञान ही सम्पूर्ण ज्ञान का आधार।
7. नाम संस्कार का बोध-स्वरुप, प्रयोजन।
8. समाज का अध्ययन।
9. अक्षर तथा अंक बोध।

3) वस्तु

1. जीवन स्वरुप का अध्ययन।
2. संबंध एवं मूल्य का पाठ।
3. कर्तव्य एवं दायित्व का पाठ।
4. कक्षा, विद्यालय, घर, स्वयं के सफाई स्वच्छता का पाठ।
5. आसन, व्यायाम, खेल।
6. परिवार पर पाठ।
7. देश के मुख्य मंत्री, राष्ट्पति, प्रधानमंत्री के संबंध में सामान्य परिचय।

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

वाक्य बोध - शब्दों को जोड़ना, लिखना, पढना ।
वाक्य बनाना स्वयं लिख कर व्यक्त होना । कविता, गीत, निबंध और पत्रों के माध्यम से । स्नेह, कृतज्ञता, विश्वास जैसा व्यवहारकारी वाक्य रचना ।

गणित - परिवार में सामान्य आदान प्रदान जोड़ घटाव, गुना पहाड़े ।
सूत्र – हर वस्तु अपने में सम्पूर्ण है घटाने से घटती नहीं । बढ़ाने से बढती नहीं इस सूत्र का अध्ययन ।
भूगोल, संस्कृति, आहार, आवास, अलंकार घर की रचना सामान्य मानचित्र आदि ।
भाई, बहन, साथियों के साथ विश्वास निर्वाह, माता-पिता गुरु के साथ कृतज्ञता निर्वाह ।

सामाजिक विज्ञान - मानचित्रों की सहायता से घर, सड़क आदि को बताना, स्थानीय इतिहास।
गाँव की संस्कृति, लोक गीत, लोक नृत्य का अध्ययन, जल श्रोत फसलों की किस्म । स्थानीय निकट मंडी ।

4) **शिक्षा प्रदान करने की विधि एवं उपाय** – पूर्ववत्

5) **अध्यापकों की अर्हता** – पूर्ववत्

6) **समय**- 40 सप्ताह
शिक्षा - कक्षा में -4 घंटे, खेल - मैदान में - 1 घंटा

7) **खेल**-पूर्ववत् ।

8) **मूल्यांकन**
ग्राह्यता का मूल्यांकन ।
किताब, कॉपी का रखरखाव, शाला में, खेल के मैदान में घर में व्यवहार का मूल्यांकन ।
शुद्ध लेखन, बोलने, पढ़ने का मूल्यांकन ।
सामाजिक विज्ञान के अंतर्गत मूल्यांकन ।
वस्तुओं सामग्री, वस्त्र, अलंकार, क्रय का सदुपयोग, सुरक्षा का मूल्यांकन ।
आज्ञापालन, सहयोग एवं अनुकरण का मूल्यांकन ।

कक्षा – 4

1) **भूमिका**
कक्षा 1,2,3 की वस्तु विधि आदि के प्रभाव में स्वयं-स्फूर्त परिवार की आवश्यकता, अनिवार्यता बालक की समझ में आने लगती है । न्याय मेरी आवश्यकता है यह बात बालक में प्रमाणित होती देखी गयी है

2) **शिक्षा का लक्ष्य**
प्रत्येक विद्यार्थी को विचार में समाधानित, व्यवहार में सामाजिक, व्यवसाय में स्वावलंबी प्रमाणित करना जो स्वायत्त परिवार का मूल आधार है । इसके लिए -

1. चिंतन जागृत होना अर्थात न्याय की दृष्टी में विचार व्यवहार होने लगे ।
2. नैसर्गिकता के प्रति जागृत करना ।
3. संबंधो की पहचान एवं मूल्यों का निर्वाह ।
4. स्वच्छता, सफाई व्यवस्था को बनाना ।
5. आचरण में शिष्ट मूल्यों का प्रवाह ।
6. परिवार-परिवार के बीच में सह-अस्तित्व है ।
7. उत्पादन-सुख, सेवा-सुख, व्यवहार-सुख ।

3) **वस्तु**

1. मूल्यों का पाठ ।
2. नैसर्गिकता का पाठ ।

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

3. स्वच्छता, सफाई एवं व्यवस्था का पाठ।
4. संबंधो में निहित अपेक्षाओ का पाठ।
5. परिवार परिवार के सह-अस्तित्व का पाठ।
6. जीवन का स्वरुप।
7. परिस्थितियों का मूल्यांकन एवं प्रस्तुति का पाठ।
8. मूल्य, चरित्र और नैतिकता की अविभाज्यता का पाठ।

भाषा - कविता, गीत, लेख आदि को स्वयं स्फूर्त रचना करवाना।

गणित-आकार, आयतन, घन, 20 तक पहाड़े। भिन्न, दशमलव, एक लाख तक की संख्याओ को पढना लिखना। गुना, भाग, मिश्र, संक्रियाएँ, ऐकिक नियम का प्रयोग, परिमिति, समय मापन, कैलेंडर की बनावट।

विज्ञान- पदार्थावस्था, प्राण-अवस्था सम्बंधित पाठ। हमारा भोजन, स्वास्थ्य सम्बन्धी। वायु, जल, मौसम, मिटटी और फसलें। बल, कार्य - उर्जा, पृथ्वी।

सामाजिक विज्ञान– भूगोल –मानचित्रों की सहायता से घर, कुओ, सड़कों को बनाना। मिटटी का स्वरुप, मौसम, वर्ष, ऋतुएँ।

इतिहास - स्थानीय इतिहास, लोक संस्कृति का अध्ययन।

4. **शिक्षा प्रदान करने की विधि एवं उपाय**- पूर्ववत्।
5. **अध्यापकों की अर्हता** – पूर्ववत्।
6. **समय**- 40 सप्ताह

   शिक्षा - कक्षा में - 4 घंटे, खेल - मैदान में - 1 घंटा
7. **खेल**-पूर्ववत्।
8. **मूल्यांकन**-

   व्यवहार और व्यवस्था में भागीदारी की ग्राह्यता का मूल्यांकन।

   शिक्षा सामग्री, अलंकार व कक्षा सामग्रियों की सुरक्षा और सदुपयोग कार्यों का मूल्यांकन।

कक्षा – 5

1) भूमिका

जीवन की शक्तियाँ जागृत होती हैं, यह देखा गया है। चिंतन जागृत जैसा की कक्षा 4 के पाठ्यक्रम में था, के फल स्वरुप बालक मूल्यांकन करने योग्य बनने के क्रम में दिखाइ पड़ता है। स्वयं में सुखी तथा सुख का श्रोत बनने की बात भी यहीं से शुरु होती है। जागृति क्रम में जीवनीक्रम परिष्करण और चिंतन जागृति की रोशनी में दृष्टा पद की ओर गति देखी गयी है।

2) शिक्षा का लक्ष्य

प्रत्येक विद्यार्थी को विचार में समाधानित, व्यवहार में सामाजिक, व्यवसाय में स्वावलंबी प्रमाणित करना जो स्वायत्त परिवार का मूल आधार है। इसके लिए -

1. न्याय की दृष्टी के आधार पर अपने कार्य व्यवहार करना।
2. प्रयोजन के साथ जीने का अभ्यास।
3. मानवीय लक्ष्य स्वानुशासन और स्वराज्य है इसको स्वीकार करवाना।
4. समझदारी के क्रम में घर में, विद्यालय में,और गाँव में अपनी भागीदारी को स्पष्ट करवाना।
5. परिवार की समझ हो।
6. जीवन में चिंतन तथा बोध शक्तियों की जागृति हो।
7. आसन, व्यायाम, आदि शरीर सम्बन्धी बातों पर बल।

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

3) वस्तु

1. परिवार की अवधारणा हो ऐसा पाठ।
2. जीवन के तात्विक स्वरुप की झलक।
3. जीवन ही कर्ता, दृष्टा, भोक्ता है ऐसा पाठ।
4. इस प्रकार की पाठ्य रचना जिसके फलस्वरुप प्रयोजन का अभ्यास हो।
5. संबंध, मूल्य, कर्तव्य, दायित्व आदि से सम्बंधित पाठ।

भाषा - व्याकरण सहित भाषा संस्कृत, हिंदी एवं अंग्रेजी के प्रचलित रुढ़िवादी (कारण, गुण, गणित) का अध्ययन, निबंध, पत्र लेखन, संभाषण, अनुस्मरण, वृतांत आदि भाषा विधियों का प्रयोग।

गणित - 1) प्रत्येक इकाई अनंत कोण संपन्न है इस सिद्धांत में जागृत कराना 2) गणित आखों से अधिक समझ से कम होता है इस सिद्धांत को हृदयंगम करवाना। बीज गणित, रेखा गणित, अंक गणित तथा व्यावहारिक गणित का अध्ययन। वस्तुओं के आधार पर।

अस्तित्व दर्शन - भौतिक विज्ञान, रसायन विज्ञान, प्राणी विज्ञान, जीव विज्ञान, मानव शरीर विज्ञान

जीवन विज्ञान (मनोविज्ञान) – जीवन में 122 आचरण होते हैं, इसके अध्ययन का उद्देश्य।

सामाजिक विज्ञान – भूगोल – गाँव, जिला, देश से सम्बंधित मानचित्रों को तैयार करना, विश्व के स्वरुप की झलक। प्रकृति के अध्ययन का उद्देश्य
।

इतिहास - **नागरिक शास्त्र** – मानवीय आचरण के आधार पर पढ़ाया जायेगा।

4) शिक्षा प्रदान करने की विधि, उपाय एवं आयाम –

1. चिंतन जागृति के क्रम में बालक मूल्यांकन योग्य होता है, यहीं से आज्ञापनाल से अनुशासन में संक्रमण की शुरुआत होती है।
2. विद्यालय में न्याय का अवसर, सुविधा एवं प्रोत्साहन।
3. जीवन की जागृति क्रम में अभिव्यक्ति, सम्प्रेषणा एवं प्रकाशन के विभिन्न अवसर प्रदान करना।
4. मूल्यांकन क्षमता के जागृति में शिक्षक सहायक बने रहेंगे। इस क्रम में जिम्मेदारी का बोध।

5) अध्यापकों की अर्हता – पूर्ववत्।

6) समय - 40 सप्ताह

शिक्षा - कक्षा में - 4 घंटे, खेल - मैदान में - 1 घंटा।

7) खेल-ज्ञानवर्धक, स्वास्थ्यवर्धक, मैत्रीवर्धक।

8) मूल्यांकन

शाला सामग्री, शिक्षा सामग्री, अलंकार सामग्रियों की सुरक्षा और सदुपयोग का मूल्यांकन।
शाला एवं शाला के बाहर विद्यार्थियों के चरित्र चित्रण का मूल्यांकन।
ग्राह्यता का मूल्यांकन।

कक्षा – 6

1) भूमिका

मूल्यांकन क्षमता आते ही बालक अनुशासन में होना हम सब अध्यापकों ने देखा है। प्रत्येक आज्ञा का मूल्यांकन कर पालन करना प्रमाणित होता है।

कक्षा 6,7,8,9,10 तक अनुशासन विधि रहेगी।

2) शिक्षा का लक्ष्य

प्रत्येक विद्यार्थी को विचार में समाधानित, व्यवहार में सामाजिक, व्यवसाय में स्वावलंबी प्रमाणित करना जो स्वायत्त परिवार का मूल आधार है। इसके लिए -

1. लक्ष्य के अर्थ में सारे कार्य, व्यवहार एवं विचार।

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

2. संबंधो की पहचान, मूल्यों का निर्वाह, मूल्यांकन ।
3. सहकारी, सहयोगी , सहभागी प्रमाणित करना ।
4. कर्तव्य - दायित्व की पहचान ।
5. अस्तित्व का अध्ययन क्रम शुरू ।
6. जीवन के तात्विक स्वरूप का अध्ययन ।
7. धीरता, वीरता, उदारता को प्रमाणित करना ।
8. भाषा - कारण, गुण, गणित ।

3) वस्तु

1. कर्तव्य और दायित्व के वहनकारी पाठ जैसे - उत्पादन की आवश्यकता, परस्पर संबंध में व्यवहार की अनिवार्यता ।
2. व्यवसाय और चरित्रकारी पाठ जैसे - गौरव, कृतज्ञता एवं स्थापित मूल्यों सहित संबंधों में वर्तने वाले पाठ
3. चरित्र का आचरण एवं आकलन, व्यवहार और व्यवसाय, में प्रकाशित होने का तथ्यपूर्ण पाठ तथा प्रबोधन
4. समाज के चार आयाम संस्कृति, सभ्यता, विधि, एवं व्यवस्था का अविभाज्य वर्तमान का प्रबोधन एवं पाठ
5. ग्राम स्वराज्य कल्पना में लाना ।

भाषा - पूर्ववत्

गणित-अस्तित्व सहज गणितीय सूत्रों का अध्ययन । बीजगणित, रेखा गणित, अंक गणित तथा व्यावहारिक गणित का अध्ययन ।

मनोविज्ञान – मानव संचेतनावादी मनोविज्ञान का अध्ययन ।

अस्तित्व दर्शन - भौतिक शास्त्र, रसायन शास्त्र, प्राणी शास्त्र, जीव शास्त्र, मानव शरीर शास्त्र

सामाजिक विज्ञान – भूगोल – इतिहास - नागरिक शास्त्र

हस्तकला एवं ग्राम शिल्प का अध्ययन ।

कला –चित्रों के माध्यम से अपने को व्यक्त करवाना । .

स्वास्थ्य –आसन व्यायाम आदि ।

4) शिक्षा प्रदान करने की विधि, उपाय एवं आयाम – पूर्ववत् ।

5) अध्यापकों की अर्हता – पूर्ववत् ।

6) समय- 40 सप्ताह

शाला में - 5 घंटे

7) खेल- स्वेच्छा ।

8) मूल्यांकन

ग्राह्यता का मूल्यांकन ।

शाला और शाल्य सामग्रियों, परिवार और पारिवारिक कार्य-व्यवहार सामग्रियों की सुरक्षा और सदुपयोग ।

अनुशासन का मूल्यांकन ।

कक्षा -7

1) भूमिका

बालक में अनुशासन पूर्वक कार्य-व्यवहार को संपादित कर प्रसन्न होना देखा गया है । चिंतन से बोध तक अध्ययन का कार्यक्रम है यह बालक में प्रमाणित हो सकता है, प्रमाणित होने के लिए शिक्षक प्रेरक होता है ।

2) शिक्षा का लक्ष्य

व्यवहार में सामाजिक व्यवसाय, में स्वावलंबी जो की स्वायत्त परिवार का आधार है को प्रमाणित करना । इसके लिए -

1. अस्तित्व का अध्ययन उद्देश्य ।

2. परमाणु की पहचान, गठनपूर्वक, गतिपथ सहित परमाणु होने की पहचान।
3. एक से अधिक परमाणुओं से रचना अणु, अणुओं से रचित पदार्थ पिंड की पहचान।
4. धीरता, वीरता, उदारता के साथ दया की पहचान।
5. व्यवसाय व व्यवहार कार्य और सेवा की दृढ़ता के रूप में धीरता को, ऐसी दृढ़ता से विचलित व्यक्ति को दृढ़ता प्रदान करने के रूप में वीरता को, तथा स्वयं की सुविधाओं को आवश्यकता अनुसार दूसरे को प्रदान कर प्रसन्न होने के स्वरूप में उदारता को प्रवर्तित करना।

3) वस्तु

भाषा

1. धीरता, वीरता, उदारता का पाठ।
2. चरित्र, मूल्य एवं नीति का पाठ।
3. परमाणु में विकास का पाठ।
4. मानव का अध्ययन का पाठ।
5. संस्कृति, सभ्यता, विधि, व्यवस्था संबंधित पाठ।

गणित - बीज, रेखा, अंक एवं व्यवहारिक गणित।

विज्ञान

1. भौतिक विज्ञान - अस्तित्व सहज भौतिक सूत्रों का अध्ययन।
2. प्राणी विज्ञान - प्राणसूत्र का अध्ययन, प्राणकोषा एवं बीजानुषंगीय विधि का अध्ययन।
3. जीव विज्ञान - वंशानुषंगियता और आशाबंधन का अध्ययन।
4. मानव शरीर विज्ञान - जीवन जागृति को प्रमाणित करने योग्य अंग-अवयवों का अध्ययन।

सामाजिक विज्ञान- इतिहास, भूगोल एवं नागरिक शास्त्र- व्यवहारवादी समाजशास्त्र का आरंभिक अध्ययन।

मनोविज्ञान - मानव संचेतनावादी मनोविज्ञान का अध्ययन।

भाषा - अंग्रेजी का ज्ञान।

कला - स्वराज्य का चित्रण और स्वराज्य में जीने की कला का चित्रण।

ग्राम शिल्प - तकनीकी का अध्ययन।

4) शिक्षण विधि - अनुशासन पूर्वक।

5) अध्यापक की अर्हता – पूर्ववत्।

6) समय - 40 सप्ताह।
5 घंटे कक्षा में।

7) खेल - स्वेच्छा।
स्वास्थ्य - आसन, व्यायाम।

8) मूल्यांकन-

ग्राह्यता का मूल्यांकन।
शाला और शाल्य सामग्रियों का सदुपयोग व सुरक्षा।
परिवार संपर्क एवं गुरुजनों के साथ किए गए व्यवहार का मूल्यांकन।

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

कक्षा 8

1) भूमिका-

अनुशासित बालक के प्रयोग, व्यवहार में प्रमाणों की झलक मिलनी प्रारंभ होती देखी गई है। ऐसा बालक ही वर्तमान में प्रमाण का आधार बनता है। ऐसे सभी विद्यार्थी वर्तमान में विश्वस्त एवं भविष्य के प्रति आश्वस्त रहते हैं।

2) लक्ष्य

व्यवहार में सामाजिक एवं व्यवसाय में स्वावलंबी के रूप में प्रमाणित करना, जो स्वायत्त परिवार का आधार है। इसके लिए -

1) संबंधों की पहचान, मूल्यों का निर्वाह, मूल्यांकन।
2) जीवन ज्ञान से संपन्न करना।
3) अस्तित्व के अध्ययन के क्रम।
4) मानवीयता पूर्ण आचरण में संपन्न करना।

3) वस्तु -

भाषा

1. देखना ही समझना, समझना ही देखना सिद्धांत के आधार पर पहचान क्षमता और उसकी अक्षयता का पाठ।
2. संज्ञानशीलता एवं संवेदनशीलता का संयुक्त प्रभावशीलन ही जीवन का परावर्तन एवं प्रत्यावर्तन होने का पाठ।
3. समाज के चारों आयाम एवं पांचों स्तरों पर पाठ।
4. मानव पर प्रकृति के साथ सहअस्तित्व की पहचान का पाठ।
5. कर्ता, दृष्टा एवं भोक्ता मानव ही होने के वैभव का पाठ।
6. मानव, मानवेतर प्रकृति का ज्ञाता होने का और मूल में चैतन्य इकाई होने का पाठ।

गणित - रेखा गणित, बीजगणित तथा व्यवहार गणित।

अस्तित्व दर्शन(विज्ञान)- प्राणीशास्त्र, पदार्थ विज्ञान - भौतिक एवं रसायन शास्त्र, जीव शास्त्र, मानव शरीर शास्त्र।

मनोविज्ञान - मानव संचेतनावादी मनोविज्ञान का अध्ययन। मन, वृत्ति, चित्त, बुद्धि और आत्मा जैसे अक्षय बल और आशा, विचार, इच्छा, संकल्प, और प्रमाणिकता जैसी अक्षय शक्तियों का संयुक्त स्वरूप जीवन, जीवन शक्तियों में प्रत्यावर्तन एवं परावर्तन की आवश्यकता, विशालता एवं उपयोगिता व प्रयोजनीयता का पाठ।

स्वायत्त परिवार रूपी समाजिक विज्ञान। भूगोल। इतिहास। नागरिक शास्त्र - व्यवहारवादी समाज शास्त्र एवं संविधान।

कला - स्वराज्य का चित्रण। स्वास्थ्य - आसन एवं व्यायाम। ग्राम शिल्प।

4) शिक्षण विधि – पूर्ववत्।

5) अध्यापक अर्हता - पूर्ववत्।

6) समय - पूर्ववत्।

7) खेल - पूर्ववत्।

8) मूल्यांकन -

ग्राह्यता एवं योग्यता का मूल्यांकन।

गांव, मोहल्ला, शाला, परिवार में किया गया व्यवहार और चरित्र का मूल्यांकन।

शालेय एवं शाला परिवार, परिसर वस्तुओं के सदुपयोग और सुरक्षा का मूल्यांकन।

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

कक्षा – 9

1) **भूमिका –**

जीवन ज्ञान ही समस्त ज्ञान का मूल आधार है। जीवन ज्ञान और अस्तित्वदर्शन ज्ञान के फलस्वरूप जीवन ही अस्तित्व में दृष्टा होना देखा गया है। दृष्टा पद में जीवन मानवीयता पूर्ण आचरण को कर पाता है। आचरण पूर्णता ही निरंतर आनंद का स्रोत है। इस कक्षा के प्रत्येक बालक स्वानुशासन की ओर अग्रसर हो, प्रमाण क्रम में आए ऐसी अपेक्षा है।

2) **लक्ष्य-**

स्वयं के प्रति विश्वास, श्रेष्ठता के प्रति सम्मान, व्यवहार में सामाजिक और व्यवसाय में स्वावलंबी होने में स्वयं को प्रमाणित होना है। इसके लिए-

1. परिवार की समझ, व्यवहार में प्रमाण, परिवारगत उत्पादन कार्यों में भागीदारी को प्रमाणित करना।
2. परिवार-परिवार में परस्पर पूरकता एवं भागीदारी है इसका बोध।
3. ग्राम स्वराज्य की आवश्यकता, परिकल्पना, आधार एवं योजना।
4. स्वयं में व्यवस्था तथा व्यवस्था में भागीदारी का बोध और उद्देश्य।
5. चैतन्य इकाई मूलतः एक गठनपूर्ण परमाणु होने के कारण परमाणु में प्रस्थापन-विस्थापन से मुक्ति ही गठनपूर्णता का अर्थ है। गठनपूर्ण इकाई में बल और शक्ति की अक्षयता स्वयंस्फूर्त सिद्ध हो जाता है।

3) **वस्तु - भाषा**- साहित्य।

- जीवन का परिचय, जीवन मूल्य का परिचय, जीवन मूल्यों के अर्थ में मानव मूल्य, मानव मूल्य के अर्थ में व्यवहार मूल्य, व्यवहार मूल्य के अर्थ में व्यवसाय मूल्य सार्थक होना ही सदुपयोग और सुरक्षा होने का तथ्यपूर्ण पाठ। तन, मन(जीवन), धन रुपी अर्थ का सदुपयोग ही धर्म नीति (राज्यनीति) होने के तथ्य का पाठ। फलतः तन, मन(जीवन) और साधनों का सदुपयोग एवं सुरक्षा ही नैतिकता होने तथा चरित्र एवं मूल्यों से अविभाज्य होने के तथ्य का पाठ।
- मानव जड़-चैतन्यात्मक प्रकृति का संयुक्त साकार रूप है। न्याय में पूर्ण जीवन जागृति सहज कार्य, व्यवहार, विन्यास का प्रबोधन एवं पाठ।
- अस्तित्व में चारों अवस्थाओं का एवं धरती एक पूर्ण रचना एवं व्यवस्था है का पाठ।

अंग्रेजी भाषा का प्रयोग।

गणित - रेखा, बीज, अंक गणित के साथ व्यवहारिक गणित का अध्ययन।

मनोविज्ञान - मानवसंचेतनावादी मनोविज्ञान का अध्ययन। चैतन्य शक्तियाँ अर्थात आशा, विचार, इच्छा, संकल्प और अनुभूतियां शरीर के द्वारा प्रकाशित होने की व्यवस्था का पाठ। अधिक बल (स्थिति) और शक्ति (गति) कम बल (स्थिति) और शक्ति (गति) के माध्यम से प्रकाशित होने की व्यवस्था का पाठ।

अस्तित्व दर्शन- 1) भौतिक शास्त्र-भौतिक रासायनिक क्रियाओं में परस्पर पूरकता।

2) प्राणीशास्त्र – उद्भिज, स्वेदज, अंडज, पिंडज की कड़ी।

3) जीव शास्त्र - वंशानुषंगियता का पाठ।

4) मानव शरीर शास्त्र।

प्रायोगिक विज्ञान।

स्वायत्त परिवार रूपी सामाजिक विज्ञान

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

1) इतिहास - मानव का इतिहास।

2) भूगोल शास्त्र - धरती के स्वरूप का अध्ययन।

3) नागरिक शास्त्र - संविधान का अध्ययन।

ग्राम शिल्प - ग्राम की आवश्यकता अनुरूप शिल्प जैसे वस्त्र।

कला - जीने की कला के रूप में परंपरा में प्रमाणित होने के क्रम में व्यवहार पाठ।

4) **शिक्षा विधि** - अनुशासन पूर्वक।

5) **अध्यापक अर्हता** – पूर्ववत्।

6) **समय** – पूर्ववत्।

7) **खेल** – पूर्ववत्।

8) **मूल्यांकन** -

ग्राह्यता एवं योग्यता का मूल्यांकन।

तन, मन, धन रूपी अर्थ की सुरक्षा और सदुपयोग, संबंधों में कृत, कारित व अनुमोदित व्यवहार, व्यवसाय के प्रति कर्तव्य जागृति का मूल्यांकन।

कक्षा 10

1. **भूमिका**

अस्तित्व दर्शन ज्ञान, जीवन ज्ञान, मानवीयतापूर्ण आचरण ज्ञान इस क्रम में विद्यार्थी स्वयं मूल्यांकन में संक्रमित होता है। स्वानुशासन में प्रमाणित होने तक विद्यार्थी संबंधों की सही पहचान, मूल्यों का निर्वाह एवं मूल्यांकन करने योग्य होता है।

2. **लक्ष्य**

स्वयं के प्रति विश्वास, श्रेष्ठता के प्रति सम्मान, व्यवहार में सामाजिक एवं व्यवसाय में स्वावलंबी को प्रमाणित करना।

3. **वस्तु** - **भाषा** - साहित्य

   1. विवेक की परिभाषा और इसकी आवश्यकता एवं प्रयोजनीयता पर पाठ।
   2. बौद्धिक, सामाजिक एवं प्राकृतिक नियम।
   3. नियमों के आधार पर मूल प्रवृतियों के स्पष्ट स्वरूपों का प्रबोधन।
   4. संबंधों में मूल्यांकन क्षमता।
   5. अस्तित्व में चारों अवस्था।

अस्तित्व दर्शन (विज्ञान) -

अस्तित्व नित्य वर्तमान है इसका बोध।

1 प्राणीशास्त्र

2 पदार्थ शास्त्र

3 जीव शास्त्र

4 मानव शरीर शास्त्र

5 प्रायोगिक विज्ञान - जीवन दृष्टा।

विकासक्रम में चारों अवस्थाओ की पहचान, चारों अवस्थाओ के विकास के क्रम में संबंध।

मनोविज्ञान- मानव संचेतनावादी विज्ञान का अध्ययन। जीवन की नित्यता और शरीर की नश्वरता का बोध। व्यवहारिक जीवन के लिए आवश्यकीय नियमों का बोध।

स्वायत्त परिवार रूपी समाजिक विज्ञान - जीने की कला।

भूगोल - प्राकृतिक नियम ।

इतिहास- मानव का अध्ययन ।

नागरिक शास्त्र- संविधान का प्रारूप । समाज सहज सार्वभौम अभीष्ट - समाधान, समृद्धि, अभय, सह अस्तित्व ।

गणित- बीजगणित, रेखा गणित, अंकगणित एवं व्यवहारिक गणित ।

कला - स्वायत्त परिवार के रूप में जीने की कला ।

ग्राम शिल्प - स्वराज्य अनुरूप वस्तुओं का चयन एवं विधि का अध्ययन, कुटीर उद्योग, ग्रामोद्योग का स्वरूप इनमें कर्माभ्यास । सामान्य आकांक्षा एवं महत्वाकांक्षा संबंधी अवधारणा एवं पाठ ।

स्वास्थ्य - आसन, व्यायाम ।

4. **शिक्षा विधि** - अनुशासन पूर्वक ।
5. **अध्यापक अर्हता** – पूर्ववत् ।
6. **समय** – पूर्ववत् ।
7. **खेल** – पूर्ववत् ।
8. **मूल्यांकन** -

ग्राह्यता एवं योग्यता का मूल्यांकन ।

तन, मन, धनात्मक अर्थ का सदुपयोग और सुरक्षा अनुशासन का मूल्यांकन ।

चरित्र संबंधी मूल्यांकन ।

स्वानुशासन प्रवृत्ति का मूल्यांकन ।

कक्षा 11

1. **भूमिका**

जीने की कला की ओर स्वयंस्फूर्त गति को हम लोगों ने देखा है । स्वानुशासन का यही आधारभूत तथ्य है । मूल्यांकन क्षमता योग्य मानव ही मानवीय परंपरा का धारक-वाहक होता है । जीवन विद्या को जीने की कला के रूप में देखा गया है ।

2. **लक्ष्य**

स्वानुशासन एवं स्वराज्य एवं उसमें भागीदारी को प्रमाणित करना ।

व्यवहार में सामाजिक एवं व्यवसाय में स्वावलंबन को प्रमाणित करना ।

3. **वस्तु**

भाषा -

1. मानवीयता की सीमा में जागृतिपूर्वक मानव तन, मन, धन का सदुपयोग व सुरक्षा करने के योग्य है का पाठ एवं प्रबोधन ।
2. मानवीयता की सीमा में मानव स्वयं स्फूर्त विधि से संयत होने के कारण आवश्यकताएँ सीमित होने का पाठ एवं प्रबोधन ।
3. मानवीयता के सीमा में मानव की आवश्यकताएँ सीमित होने के कारण अधिक उत्पादन कम उपभोग योग्य होने की संभावना एवं व्यवस्था का पाठ ।
4. प्रत्येक मानव का अभीष्ट और लक्ष्य समाधान एवं प्रमाणिकता होने का पाठ ।
5. मानवीयता ही मानव का स्वत्व होने का प्रबोधन ।
6. स्वत्व ही स्वतंत्रता और अधिकार होने का प्रबोधन ।
7. कारण, गुण, गणित पूर्वक निर्णय कर पाने की व्यवस्था का पाठ ।
8. मानव के चारों आयाम व्यवसाय, व्यवहार, विचार और अनुभूति में सामरस्यता का आधार प्रमाणिकता व समाधान होने की व्यवस्था का पाठ ।

गणित - बीजगणित, अंकगणित, रेखा गणित, निर्देशक ज्यामिति, ठोस(तीन आयामी) , त्रिकोणमिति, सदिश बीजगणित ।

कंप्यूटर प्रोग्रामिंग का संक्षिप्त रूप ।

अस्तित्व दर्शन (विज्ञान)

1. भौतिक रासायनिक विज्ञान- परमाणु संरचना, स्थिति सत्य सत्ता में संपृक्त प्रकृति का अस्तित्व सर्वस्व होने का पाठ, रेडियो धर्मिता और तृप्त परमाणु ।
2. प्राणी विज्ञान
3. वनस्पति विज्ञान
4. जीव विज्ञान
5. मानव शरीर विज्ञान
6. प्रयोगिक विज्ञान (अ, ब, स,)
7. वस्तुस्थिति सत्य में देश- काल- दिशा ।

मनोविज्ञान (जीवन ज्ञान) - मानव संचेतनावादी मनोविज्ञान का अध्ययन- विकास के क्रम में गठन पूर्णता के अनंतर जीवन में क्रियापूर्णता और आचरणपूर्णता होने और उसकी निरंतरता होने की सत्यता का पाठ ।

स्वायत्त परिवार रुपी समाज विज्ञान -

1) इतिहास- मानव स्वरुप का इतिहास

1) वन व शिला युग ।
2) शीला व धातु युग ।
3) विचारधारा का इतिहास ।
4) संस्कृति का इतिहास ।
5) आर्थिक इतिहास ।
6) राजनैतिक इतिहास ।

2) भूगोल- ग्राम का स्वरुप, उत्पादन, उपज, वन, धरती की संरचना । धरती एक पूर्ण रचना एवं अविभाज्य व्यवस्था । देश का स्वरुप ।

3) नागरिक शास्त्र- मानवीय संविधान एवं व्यवस्था का अध्ययन ।

4. **शिक्षा विधि- उपाय- आयाम**- प्रबोधन एवं स्वानुशासन पूर्वक न्याय सुलभता एवं विनिमय सुलभता पूर्वक ही समाज के चारों आयाम संस्कृति, सभ्यता, विधि, एवं व्यवस्था में संपूर्ण सामरस्यता का पाठ ।

5. **अध्यापक अर्हता-** पूर्ववत् ।
6. **समय** - पूर्ववत् ।
7. **विज्ञान एवं तकनीकी** - उत्पादन कुशलता एवं निपुणता का प्रबोधन एव कर्माभ्यास ।
8. **मूल्यांकन -**

योग्यता का मूल्यांकन ।

व्यवहार में चरित्र अर्थात शिष्टता, व्यवसाय में कर्माभ्यासिता तथा स्वानुशासन पूर्वक किया गया तन, मन, धन का सदुपयोग और सुरक्षा का मूल्यांकन ।

कक्षा 12

1. भूमिका

कक्षा 12 तक विद्यार्थी में जीवन ज्ञान, अस्तित्व दर्शन ज्ञान एवं मानवीयतापूर्ण आचरण ज्ञान का बोध होना पाया जाता है। इसके पश्चात वस्तु विद्या तथा जीने की कला में प्रमाणित होने का अवसर सुविधा एवं प्रोत्साहन की आवश्यकता होती है।

2. लक्ष्य

स्वानुशासित हो स्वराज्य में स्वयं को प्रमाणित करें। व्यवहार में सामाजिकता एवं व्यवसाय में स्वावलंबन को प्रमाणित करना।

3. वस्तु- भाषा - अभिव्यक्ति - संप्रेषणा

1. गुणात्मक विकास अमानवीयता से मानवीयता तथा मानवीयता से अतिमानवीयता की ओर जागृति की संभावना, गति, प्रक्रिया बोध का पाठ।
2. उपयोगिता मूल्य व सुंदरता मूल्य, उपयोगिता आहार, आवास, एवं अलंकार, दूरश्रवण, दूरगमन, दूरदर्शन के प्रयोजन होने का पाठ।
3. जीवन जागृति ही जीवन का परम लक्ष्य होने का पाठ। शिक्षा प्रदान करने के लिए योग्यता अनुसार उचित कक्षाओ में अवसर प्रदान करने की व्यवस्था का पाठ एवं अभ्यास।
4. मानवीय स्वभाव - धीरता, वीरता, उदारता, दया, कृपा, करुणा का पाठ। न्याय, धर्म, सत्य का पाठ। परिवार, स्वराज्य एवं आचरण का पाठ।

गणित- बीजगणित, अंकगणित, रेखा गणित।

1) खगोलीय गणित
2) निर्देशांक ज्यामिति
3) ठोस (तीन आयामी) ज्यामिति
4) त्रिकोणमिति
5) सदिश बीजगणित
6) कंप्यूटर प्रोग्रामिंग का संक्षिप्त रूप

अस्तित्व दर्शन (विज्ञान)

1) सत्ता में संपृक्त प्रकृति अस्तित्व सर्वस्व।
2) अस्तित्व ना घटता ना बढ़ता है।

इनके आधार पर

1. भौतिक विज्ञान - प्रत्येक परमाणु के मध्य में स्थित अंश मध्यस्थ क्रिया होने का पाठ।
2. प्राणी विज्ञान 3. वनस्पति विज्ञान 4. जीव विज्ञान 5. मानव शरीर विज्ञान 6. प्रायोगिक विज्ञान

जीवन ज्ञान (मनोविज्ञान) - मानव संचेतना वादी मनोविज्ञान।

1. परिष्कृत चेतना ही मानव संचेतना होने, मानव संचेतना ही संज्ञानशीलता और संवेदनशीलता होने का संतुलित पाठ।
2. संचेतना ही जागृत, अर्द्धजागृत, अल्पजागृत, पद भेदों में प्रकाशित होने की व्यवस्था का पाठ
3. जीवन संचेतना के स्तरों का स्वरुप गुणात्मक परिवर्तन के क्रम में क्रिया व आचरणपूर्णता का प्रबोधन।

स्वायत्त परिवार रूपी समाज विज्ञान

इतिहास - मानव स्वरुप का इतिहास।

1) वन व शीला युग
2) शिला व धातु युग
3) विचार धारा का इतिहास
4) संस्कृति का इतिहास

5) आर्थिक इतिहास

6) राजनैतिक इतिहास

भूगोल - देश का स्वरूप, उत्पादन, उपज, वन, धरती की संरचना, धरती एक पूर्ण रचना, व्यवस्था, विश्व का स्वरूप ।

नागरिक शास्त्र - संविधान एवं व्यवस्था का अध्ययन ।

4. **शिक्षा विधि- उपाय- आयाम**- प्रबोधन एवं स्वानुशासन पूर्वक स्वराज्य योजना एवं पञ्च योजनाओ का अविभाज्य स्वरूप ।
5. **अध्यापक अर्हता**- पूर्ववत् ।
6. **समय** - पूर्ववत् ।
7. **विज्ञान एवं तकनीकी -**

   सामान्य आकांक्षा व महत्वाकांक्षा की सीमा में वस्तुओ के निर्माण करने की आवश्यकता उसकी उपयोगिता व प्रयोजन का प्रबोधन । उपयोगी वस्तुओ के निर्माण में विज्ञान और तकनीकी पूर्वक प्रबोधन और कुशलता, निपुणता पूर्वक कर्माभ्यास ।
8. **मूल्यांकन -** स्वानुशासन व उत्पादन क्षमता का मूल्यांकन ।